Vol 5 Issue 3 Dec 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 3 | Dec - 2015

Review Of Research

संचार भाषा के विविध माध्यमों में हिंदी

मोनिका घुल्ला
सहायक प्रवक्ता,डी. ए. वी कॉलेज,अबोहर।

सारांश–

संचार परस्पर विचारों के आदान–प्रदान,जिज्ञासाओं के समाधान और प्रेरणा–प्रोत्साहन की प्रक्रिया है जो किसी समुदाय,जाति,समूह,राष्ट्र आदि में घटित होती है।वर्तमान में यह 'कम्यूनिकेशन' शब्द का पर्याय है।इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'कम्यूनिस' से हुई है जिसका अर्थ है– 'टू मेक कामॅन','टू शेयर','टू इंपोर्ट', अर्थात् सूचनाओं के आदान–प्रदान से समान भागीदारी निर्मित करना संचार का उद्देश्य है। सन् 1450 में जर्मनी में जॉन गुटेनबर्ग के मुद्रण का आविष्कार करते ही साक्षर समुदाय के लिये संचार वरदान बन गया।29 जनवरी 1780 वह स्वर्णिम दिवस आया जब भारत का पहला समाचार बंगाल गजट प्रकाशित हुआ।हिंदी का पहला समाचार पत्र उदत्त मार्तण्ड तत्पश्चात् बाला बोधिनी,ब्राह्मण,आनंद कादम्बिनी,चांद,हंस आदि पत्रिकाएं हिंदी स्वर्णिम अध्याय जोड़ा।इलैक्ट्रानिक व नव इलैक्ट्रानिक माध्यमों में रेडियों,टेलीविजन,फिल्म,अंतरताना आदि में हिंदी ने नव्य क्षितिजों का संस्पर्शन किया।गोदान,तमस उपन्यासों के फिल्मीकरण ने हिंदी को चरम पर पहुँचाया।1993 विजय छज्लानी ने इनफारमेशन सिस्टम कंपनी की स्थापना करके वेब दुनिया नाम से प्रसिद्ध किया। माइक्रोसॉफ्टवेयर ,गूगल,याहू ,ई .एम .एम, ओरोकल आदि विश्व की अनेक कम्पनियों ने बाज़ार में भारी मुनाफा देखते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे है।इसी कारण हिंदी न केवल राष्ट्र स्तर अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नवीन क्षितिजों का स्पर्श कर रही है।संचार भाषा हिंदी ने ने न केवल हिंदी भाषी अपितु अहिंदी भाषियों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया है।

बीज शब्द–संचार,अंतरताना,संस्पर्शन,क्षितिज

प्रस्तावना :–

संचार परस्पर विचारों के आदान–प्रदान, जिज्ञासाओं के समाधान और प्रेरणा–प्रोत्साहन की प्रक्रिया है जो किसी समुदाय,जाति,समूह,राष्ट्र आदि में घटित होती है।संचार मानव समाज का आधार है।हाव–भाव,संकेतों और वाणी के माध्यम से सूचनाओं का आदान–प्रदान संचार के अंतर्गत आता है।संचार के माध्यम से ही मानव सामाजिक संबंध बनाते है।मानव समाज के संचालन की समस्त प्रक्रिया संचार पर आधारित है।

संचार संस्कृत के 'चर' धातु से निःसृत है।चर का अभिप्राय है–चलना।गंभीर अर्थों में निरन्तर आगे बढ़ती रहने की प्रक्रिया संचरण कहलाती

है।वर्तमान में यह 'कम्यूनिकेशन' शब्द का पर्याय है।इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'कम्यूनिस' से हुई है जिसका अर्थ है– 'टू मेक कामॅन','टू शेयर','टू इंपोर्ट', अर्थात् सूचनाओं के आदान–प्रदान से समान भागीदारी निर्मित करना संचार का उद्देश्य है।स्त्रोत या संप्रेषक ,संदेश ,संचार–माध्यम ,संकेतीकरण, ,संकेत–वाचन ,संग्राहक,प्रतिपुष्टि ये संचार प्रक्रिया के मुख्य तत्व है।संचार निरन्तर गतिमान रहने वाली प्रक्रिया है।यह प्रेषक,प्राप्तकर्त्ता, और संदेश के बीच सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया है।प्रेषक अपने संदेश को संकेतों द्वारा ग्राहक को भेजते समय 'एनकोड' करता है और ग्राहक अपनी क्षमता के अनुसार ग्रहण करते समय संदेश को 'डिकोड' करता है।अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए प्रापक या ग्राहक जब 'प्रतिपुष्टि' भेजता है तो दोनों की भूमिका परिवर्तित हो जाती है।ग्राहक प्रेषक बन जाता है और प्रेषक ग्राहक।संप्रेषण–दर संप्रेषण व्यक्ति,समूह और जन में संचार प्रक्रिया का प्रवाह होता है।संचार प्रक्रिया के दो छोरों के अंतर्संबंधों के निम्न रूपों को विद्वानों ने मान्यता दी है–

1–अंतःवैयक्तिक संचार

2–अंतर्व्यक्ति संचार
3–समूह संचार
4–जन संचार
5–परम्परागत संचार

संचार के माध्यम–संचार के माध्यमों को तीन भागों में बाटा जा सकता है–

1–मुद्रण माध्यम–इसके अंतर्गत समाचार पत्र,पत्रिकाएँ,पुस्तके आती है।
2–इलेक्ट्रॉनिक माध्यम–इसके अंतर्गत रेडियों कैसेट–रिकार्डर,दूरदर्शन वीडियों तथा फिल्म आती है।
3–नव–इलेक्ट्रॉनिक माध्यम–इसके अंतर्गत इन्टरनेट आता है।

मुद्रण माध्यम व हिंदी–सन् 1450 में जर्मनी में जॉन गुटेनबर्ग के मुद्रण का आविष्कार करते ही साक्षर समुदाय के लिये संचार वरदान बन गया।इस प्रविधि से उभरे हुए अक्षरों सतहों पर स्याही और कागज का प्रयोग किया जाता है।तत्पश्चात् सन् 1466 में फ्रांस ,1477 में इग्लैण्ड, और 1554 में पुर्तगाल में इस कला का प्रचार हुआ।पुर्तगाल से इसाई धर्मप्रचारकों द्वारा सन् 1550 में दक्षिण भारत के गोवा में ये कला आई।भारत में सर्वप्रथम पुस्तक रोमन लिपि और देशी भाषा में सन् 1560 में छपी थी।परन्तु सन् 1779 में कोलकता में प्रेस खुलने तक कोई अन्य उन्नति इस क्षेत्र में नही हुई।29 जनवरी 1780 वह स्वर्णिम दिवस है जब एक गैर–भारतीय ने भारत का पहला पत्र प्रकाशित किया।बंगाल गजट एण्ड कैलकटा एडवर्टाइजर के सर्वस्व जेम्स आगस्टस हिकी ने इस पत्र को प्रकाशित किया।परन्तु भारतीय पत्रकारिता के जनक राजा राममोहन राय के प्रयास से सन् 1818 में बंगाल गजट ,1821 में संवाद कौमुदी और मिरातुल–अखबार निकले।

हिंदी साहित्य का पहला समाचार पत्र पं. युगलकिशोर शुक्ल के प्रयासों से 30 मई 1826 ई. को 'उदंत मार्तण्ड' प्रकाशित हुआ।इसके उपरान्त भारतेन्दु युग में हिंदी समाचार पत्र व पत्रिकाओं का बहुत विकास हुआ।स्वयं भारतेन्दु ने कवि वचन सुधा,बाला बोधिनी व हरिश्चंद्र पत्रिका का प्रकाशन कर हिंदी पत्रकारिकता को समृद्ध किया।बाल कृष्ण भट्ट की 'हिंदी प्रदीप', प्रताप नारायण मिश्र की 'ब्राह्मण', श्यामसुन्दर सेन का 'समाचार–सुधावर्षण',राजा लक्ष्मण सिंह का 'प्रजा हितैषी' लाला श्रीनिवास दास का 'सदादर्श',राधाचरण गोस्वामी की 'भारतेन्दु पत्रिकाओं ने हिंदी पत्रिकारिता को निश्चित मार्ग प्रदान किया।

हिंदी पत्रिकारिता में सरस्वती पत्रिका का विशेष योगदान रहा।इस पत्रिका ने न केवल हिंदी पत्रिका को विकसित किया अपितु हिंदी भाषा को निश्चित स्वरूप भी प्रदान किया।काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका ने भी हिंदी पत्रिका की गति को बढ़ावा दिया। इसके अतिरिक्त प्रभा ,प्रताप ,कर्मवीर ,इन्दु ,चाँद ,मतवाला ,समन्वय ,विशाल भारत,सुधा ,हंस ,नये पत्ते,नयी कविता,नया ज्ञानोदय,दस्तावेज, बहुवचन आदि पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा है। आज के समय में पंजाब केसरी,दैनिक जागरण,अमर उजाला आदि पत्रिकाएँ बहुचर्चित है।

इलैक्ट्रानिक माध्यम–इलैक्ट्रानिक माध्यमों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है–दृश्य माध्यम,श्रव्य माध्यम और दृश्य–श्रव्य माध्यम।

रेडियों–इलैक्ट्रानिक संचार–माध्यमों में रेडियों अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है।यह एक ऐसा माध्यम है जो अदृश्य विद्युत चुंबकीय तंरगों के द्वारा संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रेषित करता है।सूचना,मनोरंजन,शिक्षा आदि के प्रसारण के क्षेत्र में विशेष ख्याति हासिल की है।रेडियों प्रसारण संबंधी तकनीकी प्रयोग 19 वी शती में प्रारम्भ किए गए।1815 ई. में इटली के मारकोनी ने रेडियों टेलिग्राफी के माध्यम से पहला संदेश प्रसारित किया।यह संदेश 'मार्स कोड' के रूप में था।सन् 1920 के पिट्सबर्ग में सर्वप्रथम आकाशवाणी प्रसारण केन्द्र की स्थापना हुई। 23 फरवरी 1920 को मारकोनी कंपनी ने चैम्सफोर्ड से विधिवत् सर्वप्रथम प्रसारण प्रारम्भ किया।जान रीथ के निर्देशन में स्थापित बी. बी. सी केन्द्र द्वारा विश्व के अनेक देशों में रेडियों ने धूम मचा दी।कालान्तर में इलैक्ट्रॉन तथा ट्रांजिस्टर की खोज ने रेडियों–ट्रांजिस्टर तथा दूरसंचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया।

भारत में रेडियों का इतिहास अगस्त,1921 से प्रारम्भ होता है जब पोस्ट एंड टेलीग्राफ विभाग द्वारा ' द टाइम ऑफ इंडिया' के सहयोग से बंबई संगीत कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया।इस कंपनी की ओर से पहला प्रसारण 23 जुलाई 1927 को बंबई में हुआ।इसके बंबई रेडियों स्टेशन का उद्घाटन तत्कालीन वायसराय लार्ड इर्विन ने किया था।इसी दिन बंबई में 'इंडियन ब्रॉडकासटिंग कंपनी' की स्थापना हुई।इस उद्घाटन के साथ 26 अगस्त 1927 को बंगला में समाचार बुलेटिन का प्रसारण हुआ।सन्1930 में भारत सरकार ने प्रसारण सेवा का प्रबंध अपने अधिकार में ले लिया।भारत सरकार ने 1930 में 'इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस' की स्थापना की।1 जनवरी 1936 में पहला प्रसारण केन्द्र दिल्ली में स्थापित हुआ।8 जून 1936 से इसका नाम 'ऑल इंडिया रेडियों ' कर दिया गया।सन् 1957 में व्यावसायिक प्रसारण के उद्देश्य से ' विविध भारती' सेवा प्रारम्भ हुई।1961 में ऑल इंडिया रेडियों ने अपना रजत वर्ष मनाया।सन् 1967 से 'ऑल इंडिया रेडियों 'व्यावसायिक बना।नवंबर 1967 को विज्ञान प्रसारण सेवा भी प्रारम्भ कर दी गई। 1 अप्रैल 1994 से 'स्काई रेडियों' कार्यक्रम ने आकाशवाणी जगत् में नई हलचल मचा दी है।अभी हाल ही में 2003 में रेडियों के एफ. एम. चैनलपर निजी चैनलों का प्रवेश हो गया।ये चैनल हैं रेडियों सिटी 91,रेडियों एफ. एम. मिर्ची 98. 3,रेडियों 93. 50।

दिल्ली में रेडियों की स्थापना के बाद प्रारम्भिक रेडियों लेखकों व नाटककारों में सआदत हसन मंटो तथा उपेन्द्रनाथ अश्क प्रमुख थे।नागरी लिपि में नाटक रेडियों लेखन में उपेन्द्रनाथ ने सराहनीय कार्य किया।इनके बाद में गिरिजाकुमार माथुर तथा इंद्र विद्यावाचस्पति रेडियों से जुड़े।पहला हिंदी रंडियों नाटक 1936 में प्रसारित हुआ था।उपेन्द्रनाथ अश्क का ऐतिहासिक नाटक 'जय पराजय' 1937 में ही प्रसारित हुआ।घटना प्रधान की अपेक्षा विचार प्रधान या वातावरण प्रधान नाटक ही रेडियों के लिए अधिक उपयुक्त,सफल व प्रभावोत्पादक माने जाते है।इसके इलावा अश्क की कहानी व 1939 में ' स्वर्ग की झलक' तथा 1940 में 'छठा बेटा' नाटक रेडियों पर आए।रेडियों पाटक द्वारा पात्र का व्यक्तित्व प्रस्तुत करने के उद्देश्य से डॉ राम कुमार वर्मा ने 1942 में एक नाटक ' औरंगजेब की आखिरी रात' रचा।रामवृक्ष बेनपुरी के 'आम्रपली' रेडियों नाटक ने भी काफी धूम मचाई।विष्णु प्रभाकर जी ने मनौवैज्ञानिकता के आधार पर रेडियों नाटक 'अशोक' रचा।सेठ गोबिन्ददास तथा चंद्रगुप्त विद्यालंकार द्वारा रचित रूपक 'नवप्रभात' 16 अगस्त 1947 को प्रसारित हुआ।अज्ञेय का रूपक 'नान्य

पन्था' भी प्रसारित हुआ।कालिदास की रचना 'मेघदूत' का रेडियों रूपान्तर उदय शंकर भट्ट ने किया। 'कामायनी' तथा 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के रूपान्तर प्रभाकर माचवे द्वारा होकर प्रसारित हुए।विष्णु प्रभाकर का रूपक 'हमारा स्वाधीनता संग्राम' छः भागों में 1949 से मार्च 1950 तक प्रसारित होते रहे।रेवती सरन शर्मा ने जहाँ यथार्थवादी सामाजिक नाटक रचे,वहीं डॉ राम कुमार वर्मा ने ऐतिहासिक नाटक रचे।रेडियों नाट्य का प्रत्येक रूप 1955 तक अजमाया गया।'आधे अधूरे नाटक' रंगमंच के लिए ही लिखा गया।हिंदी में यह नाटक दिल्ली केन्द्र से 1971–72 में प्रसारित हुआ था।सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का लड़ाई नाटक, विष्णु प्रभाकर का चट्टान से चट्टान तक, अमृतलाल नागर का मानस का हंस,मृदुला गर्ग का एक और अजनबी व भीष्म साहनी का हानुष रेडियों रूपान्तर के साथ ही रेडियों शैली में रचे गए। व सफलतापूर्वक रेडियों पर प्रसारित हुए।इस प्रकार हिंदी लेखकों के प्रयासों से हिंदी भाषा रेडियों पर प्रसारित होने लगी।हिंदी साहित्य के एकांकीकारों ने भी एंकाकी को रंडियों एकांकी के रूप में परिणित किया है।उदयशेकर भट्ट की अनेक एंकाकियां रेडियों प्रसारित हुई।रेडियों रूपकों ने भी रेडियों पर खूब धूम मचाई है।विष्णु प्रभाकर का रेडियो मोनोलाग 'नए–पुराने' इस विधा का उत्तम उदाहरण है।रेडियो फीचर तथ्यों,रेडियों वार्ता ने हिंदी प्रेमियों को नया खजाना ही दे दिया।

दूरदर्शन–संचार का सर्वाधिक लोक–प्रचिलत दृश्य–श्रव्य माध्यम है–दूरदर्शन।यह वर्तमान तकनीकी युग की महत्त्वपूर्ण भेंट है।तस्वीरों को प्रसारित करने की युक्ति सन् 1890 ई. में ज्ञात हो चुकी थी।1906 में ली. डी. फारेस्ट ने शीशे की नली से बिजली निकालकर नया प्रयोग किया तथा फ्लेमिंग द्वारा वायरलैस टेलीग्राफ को पेटेंट कराया गया।1908 में कैम्पवैल ने टेलीविजन के सिद्धांत को प्रस्तुत किया।26 जनवरी 1926 को स्काटलैण्ड में इसका सफल प्रदर्शन किया।2 नवम्बर 1936 को लंदन में बी. बी. सी द्वारा नियमित दूरदर्शन सेवा प्रारम्भ की गई।भारत में प्रथम प्रायोगिक दूरदर्शन केन्द्र का उद्घाटन 15 सितम्बर 1959 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा दिल्ली में किया गया।यह छोटे स्तर का श्वेत–स्याम प्रयास था।15 अगस्त 1965 को दूरदर्शन सं सर्वप्रथम समाचार बुलेटिन प्रारम्भ हुआ।अगस्त 1975 से भारत में उपग्रह की सहायता से आंध्रप्रदेश ,उड़ीसा,उत्तरप्रदेश,गुजरात,बिहार और महाराष्ट्र के 2400 गाँवों में दूरदर्शन सेवा प्रारम्भ की गई।अप्रैल 1976 को चंदा समीति की सिफारिश पर दूरदर्शन और आकाशवाणी को अलग–अलग कर दिया गया।इसी वर्ष दूरदर्शन ने विज्ञापन जगत् में प्रवेश किया।15 अगस्त 1982 को एशियाई खेलों से पूर्व दूरदर्शन का रंगीन प्रसारण प्रारम्भ हुआ।19 नवम्बर 1985 से दूरदर्शन पर इनटेक्स्ट नामक टेलीकास्ट सेवा प्रारम्भ की गई।1993 में मैट्रों चैनल के साथ–साथ विदेशी चैनलों का आगमन हुआ।राष्ट्रीय प्रसारण डी. डी –1,2,3 में विभक्त हो गया।दूरदर्शन की आय का प्रमुख स्त्रोत 'दूरदर्शन विज्ञापन सेवा' का प्रारम्भ वर्ष1996 में हुआ।

60 के दशक में एक नाट्यमाला 'ऐसा भी होता है' गंगाधर शुक्ल द्वारा लिखित व निर्देशित प्रस्तुत हुई,जिसको भारतीय टेलीविजन का पहला धारावाहिक कहा जा सकता है।इसके अतिरिक्त उस दशक में अनेक उपन्यासों को टेलीविजन के लिए रूपांतरित किया गया।इन में से प्रमुख थे–प्रेमचंद का रंगभूमि,भगवतीचरण वर्मा का भूले बिसरे चित्र,धर्मवीर भारती का गुनाहो का देवता व जीवी।70 वे दशक में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के कुछ स्नातक टेलीविजन से जुड़े और उन्होने टी. वी नाटकों की प्रस्तुति में सक्रिय भूमिका निभाई।इसी दशक में फिल्म कैमरों के रहते टेलीविजन के लिए आषाढ़ का एक दिन जैसे नाटक फिल्माए गए जो काफी लोकप्रिय रहे। आठवें दशक में टेलीविजन नाटक ,दूरदर्शन पर नियमित रूप से दिखाए जाने लगे।इसके अतिरिक्त इस दशक में हिंदी धारावाहिक हम लोग तथा रेवतीशरण सरन शर्मा द्वारा लिखित फिर वही तालाश भी निर्मित हुए।मनोहर श्याम जोशी का हम लोग 265 किस्तों में दर्शाया गया।इन्ही दिनों टेलीफिल्मों का सिलसिला भी प्रारम्भ हुआ।पहली टेलीफिल्म प्रेमचंद की कहानी सद्गति पर आधारित थी।

इसके अतिरिक्त धर्मवीर भारती का बंद गली का आखिरी मकान,अमरकांत की डिप्टी कलेक्टर कहानी,प्रेमचंद की नमक का दरोगा कहानी,मन्नू भंडारी की त्रिशंकु,अकेली कहानी,भीष्म साहनी का कबीरा खड़ा बाज़ार में,नासिरा शर्मा का सबीना के चालीस चोर आदि टेलीविजन पर प्रकाशित हुए।

फिल्म–विश्व सिनेमा की नींव फोटोग्राफी के आविष्कार के साथ ही 1820 में 'आप्टिकल खिलौने' के रूप में रख दी गई थी।1890 में थॉमस अल्वा एडीसन ने काइनेटोस्कोप को आविष्कृत कर मुयाब्रिज के द्वारा उत्पन्न चलचित्रीय प्रभाव को नया आयाम दिया।व्यवसाय के रूप में इसे स्थापित करने का श्रेय ल्यूमिएरे बंधुओं को जाता है जिन्होंने 28 दिसम्बर 1895 को पेरिस में सर्वप्रथम इसका प्रदर्शन किया। भारत में इसका सूत्रपात्र 1913 में 'आलमआरा' के प्रदर्शन से हुआ।भारत में सिनेमा का पहला शो 7 जुलाई 1896 को फ्रांस के दो भाइयों लुमरे एवं लुईस लुमरे ने किया।राजा हरिश्चंद्र दादा साहेब फाल्के द्वारा निर्मित फीचर फिल्म थी।इसका प्रदर्शन 3 मई 1913 को हुआ।1920 में पहला वत्सलता हरण का पहला फिल्म पोस्टर बनाया गया।हिंदी भाषा में लिखित अनेक रचनाओं को फिल्मों के रूप में रूपान्तरित किया।प्रेमचंद के उपन्यास गोदान पर फिल्म बनी और बहुचर्चित भी रही।इसके अतिरिक्त आनंद मठ, तमस्, दो बीघा जमीन, शतरंज के खिलाड़ी रचनाओं को फिल्मों के रूप प्रस्तुत किया जा चुका है।

कम्प्यूटर–कम्प्यूटर शब्द कम्प्यूट शब्द से बना है।जिसका अर्थ है–गणना।वर्तमान समय में कम्प्यूटर ने मनुष्य के ज्ञान,सूचना और सुविधा के नए क्षितिजों को संस्पर्शित किया है।कम्प्यूटर को दूर संचार की प्रणालियों की आत्मा माना गया है।यह वस्तुतः एक यांत्रिक उपकरण है जो एक सेंकिण्ड में हमारे शब्दों को विश्व में किसी भी कोने में पहुँचाने की क्षमता रखता है।

अंतरताना–विश्वभर के विश्वविद्यालयों,सरकारी प्रतिष्ठपनों,व्यावसायिक एजेंसियों,अनुसंधान संस्थानों आदि के हजारों कम्प्यूटरों को आपस में जोड़ने वाले जाल को अंतरताना कहते है।कम्प्यूटरों को आपस में जोड़ने वाले इस तकनीकी प्रोग्राम को इंटरनेट प्रोटोकोल कहते है।विश्व में अलग–अलग स्थानों पर स्थित अनेक कम्प्यूटरों को एक नेटवर्क के द्वारा आपस में जोड़ा जाता है।इस नेटवर्क के माध्यम से सूचना–संचार के लिये बनाई गई एक विशेष प्रकार की प्रणाली इंटरनेट कहते है।हम कोई भी विशेष जानकारी वेब–साइट को कम्प्यूटर पर खोल कर हासिल कर सकते है।इस सिस्टम को वर्ल्ड वाइल्ड वेब कहते है।इन्टरनेट कनेक्शन के लिए जिन उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है,वे इस प्रकार है–कम्प्यूटर,माडम,वेब ब्राउजर,टेलीफोन लाईन तथा इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर।

विश्व का पहला कम्प्यूटर इनियाक अमेरिकी रक्षा विभाग के खर्चे पर सन् 1945 में विकसित किया गया था।इंटरनेट का आविष्कार सन्1969 में हुआ था,उस समस इसे 'अर्पानेट' कहा जाता है।इसका मूल उद्देश्य देश के विभिन्न भागों में फैली सैनिक छावनियों के बीच आपसी संपर्क स्थापित करना था।इंटरनेट के जन्म के लगभग 10 वर्ष बाद अर्थात् 1979 में एक शैक्षिक नेटवर्क 'यूजनेट –न्यूज' के रूप में

इसका पहला सार्वजनिक विस्तार हुआ,पर वह भी सरकारी नियंत्रण के अधीन ही।भारत में इंटरनेट का सबसे पहला उपयोग 'सैनिक अनुसंधान नेटवर्क' ने शैक्षिक और अनुसंधान क्षेत्रों के लिए किया।

भारत में सबसे पहले चेन्नई से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक 'द हिंदू' का साप्ताहिक संस्करण सन् 1995 में इंटरनेटपर आया।हिंदी समाचारों पत्रों में सबसे पहले 'नई दुनिया' ने सन् 1997 में अपना इंटरनेट संस्करण शुरू किया।हिंदी भाषा के कुछ पोर्टल्स इस प्रकार है–सत्यमं द्वारा परवर्तित–'हिंदी.सिफी.कॉम', रीडिफ द्वारा परवर्तित–'रीडिफ.कॉम हिंदी',इंड्या.कॉम द्वारा परवर्तित–'हिंदी.इडया कॉम','नेटजाल.कॉम' ।इन्हे ऑन लाईन पत्रिकाएँ भी कहा जाता है।भारत,अमेरिका,इंग्लैण्ड,आस्ट्रेलिया आदि कई देशों के कई विश्वविद्यालयों ने इंटरनेट द्वारा हिंदी के प्रशिक्षण की सेवाएं उपलब्ध कराई हैं।जिसका विवरण इस प्रकार हैं–

1)Address:

http://www.cs.colostate.edu/~malaiya/hindilink.html
Hindi language resources
Hindi lessons on the web
HindiAlphabet,conversation from syracuseU
Hindi lesson from JNCC,Russia
Web lessons:learn to read hindi
Hindi dictionary download
Hindi:introductory grammar

उसके अतिरिक्त हिंदी आज संगणक के विकभन्न पहलुओं की गहराई में पहुँच चुकी है जैसे–

1–1993 विजय छज्लानी ने इनफारमेशन सिस्टम कंपनी की स्थापना करके वेब दुनिया नाम से प्रसिद्ध किया।
2–हेमंत कुमार जी ने तख्ती नामक युनीकोड विकसित करके देवनागरी लेखन औजार के रूप में प्रयोग किया।
3–वास्तु श्री निवास जी ने 'बरह' नामक साफॅटवेयर बनाया।जिसमें हिंदी सहित कई भारतीय भाषाओं को टाईप किया जा सकता है।
4–देवेन्द्र पारिख ने हिंदी राईटर का अनुपयोग किया,जिसमें हिंदी वर्तनी की जांच की जा सकती है।
5–रजनीश मंगला ने हिंदी फाण्ट कनर्वटर बनाया जिसने हिंदी के विकास में विशेष भूमिका निभाई।
हिंदी आज विश्व की प्रधान भाषाओं में से एक है।आज हम प्रौद्यगिकी के रथ पर सवार होकर हिंदी को विश्व व्यापी बनाने में संकल्पबद्ध हैं।यू–टयूब के प्रयोग से हम न केवल हिंदी साहित्य लेखन अपितु वर्तनी व व्याकरण का शुद्धीकरण भी किया जा सकता है।माइक्रोसॉफ्टवेयर ,गूगल,याहू ,ई.एम.एम,ओरोकल आदि विश्व की अनेक कम्पनियों ने बाज़ार में भारी मुनाफा देखते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे है।इसी कारण हिंदी न केवल राष्ट्र स्तर अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नवीन क्षितिजों का स्पर्श कर रही है।संचार भाषा हिंदी ने ने न केवल हिंदी भाषी अपितु अहिंदी भाषियों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ–

1–प्रयोजनमूलक हिंदी,राजनाथ भट्ट,हरियाणा साहित्य अकादमी,पंचकूला.
2–मीडिया लेखनःसिद्धान्त एवं व्यवहार,डॉ.चंद्र प्रकाश मिश्र,संजय प्रकाशन,दिल्ली.
3–संचार माध्यम लेखन,गौरी शंकर रैणा,वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली.
4–प्रयोजनमूलक हिंदी,प्रो.रमेश जैन,नेशनल पब्लिशिंग हाउस,जयपुर.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org